कोविद-19 के लिए औषध निर्माण में सीएसआईआर की भूमिका

प्रियजनों,

जैसा कि आप में से कुछ को पता होगा, 5 जून 2020 भारत के आधुनिक चिकित्सा के इतिहास में चिह्नांकित करने योग्य दिन है। आप में से बहुत से लोग जानते होंगे, आधुनिक औषध और औषध निर्माण संबंधी प्रतिमान पिछले 100 वर्षों में क्रमविकसित हुआ हैं, कृपया जे डूस, साइन्स (2000) 287, 1960-64 पढ़ें। इस प्रतिमान के अनुसार, कोई भी बीमारी किसी एक कारण से होती है, जिसे बाहर से एक रसायन देकर ठीक किया जा सकता है जो कि उस कारण को दबा सकता है। इसी बाहरी रसायन को हम "दवा" या "औषधि" कहते हैं। रोग के प्रति "दवा" की प्रभावकारिता आमतौर पर सभी उपयुक्त नियंत्रणों के साथ यादृच्छीकृत नियंत्रित परीक्षण (रैंडमाइज़्ड कंट्रोल्ड ट्रायल्स [आर सी टी]) करके स्थापित की जाती है। वर्षों से, दुनिया भर में विभिन्न बीमारियों की चिकित्सा के लिए 2500 से अधिक दवाओं को मंजूरी दी गई है। जबकि यह प्रतिमान एक बीमारी के एक कारण की पहचान करने के लिए, और उस कारण को ठीक करने के लिए एक रासायनिक पदार्थ की पहचान करने के लिए क्रमविकसित हुआ है, कई देशों / संस्कृतियों में पारंपरिक पद्धति जो प्राकृतिक स्रोतों से अर्क का उपयोग करती है, की सामान्यतः उपेक्षा की गई है। इस प्रकार, दवाओं की पारंपरिक पद्धति जिसमें विभिन्न प्राकृतिक स्रोतों और उनके अर्कों का उपयोग किया गया था, का आधुनिक चिकित्सा में उपयोग नहीं किया गया है। वर्षों से बढ़ती बहस और चिंताओं के कारण, 2005 में यूएस एफडीए ने अंततः "वनस्पति संबंधी औषध (बोटानिकल्स)" के रूप में बोली जाने वाली दवाओं के एक वर्ग को मान्यता दी, जो कि पौधों से व्युत्पन्न प्राकृतिक अर्क और यौगिकों के सम्मिश्रित मिश्रण हैं। वनस्पति दवाएँ किसी बीमारी की चिकित्सा करने के लिए आवश्यक रूप से शुद्ध किए गए पदार्थ नहीं हैं। भारत में भी इसी वर्ग की दवाओं को 2015 में "पादप औषध निर्माणों (फाइटोफार्मास्यूटिकल्स)" के रूप में अपनाया गया था। फिर भी, आज तक भारत में किसी भी पादप औषध निर्माण का कोई चिकित्सा संबंधी परीक्षण (आर सी टी) नहीं किया गया है।

आज, स्थिति बदल गई है। कोविद-19 को कम करने के लिए सन फार्मा के नेतृत्व में कोक्यूलस हिरस्तुस (जिसे हिंदी में पातालगरुड़ी कहा जाता है) के अर्क का चिकित्सा संबंधी परीक्षण आरंभ हुआ है। इसके अकादमिक पक्ष का नेतृत्व आईसीजीइबी, दिल्ली और सीएसआईआर-आईआईआईएम, जम्मू ने किया है। इस प्रकार, प्रतिमानों को बदलने की कोशिश करके सीएसआईआर एक बार फिर आधुनिक चिकित्सा में एक महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहा है। मैं इन प्रयासों में शामिल सभी लोगों को इस अवसर पर बधाई देता हूँ। आइए हम सभी क्षेत्रों में सीएसआईआर के विशाल योगदान का आनंद लें, लेकिन इस संदर्भ में एक पादप औषध निर्माण को चिकित्सा संबंधी परीक्षण तक ले जाने के लिए किए गए ऐतिहासिक विकास में भाग लेने हेतु। आर सी टी के अच्छे परिणाम के लिए भी मैं इस टीम को इस अवसर पर शुभकामनाएँ देता हूँ।

शुभकामनाओं के साथ,

शेखर मांडे